International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-02-2023, Accepted: 07-03-2023, Published: 22-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 8-9

छिन्नमस्ता उपन्यास में नारी चेतना

मरिया गोरेत्ती सीस्त
पोस्ट ग्रेजुएशन प्रोजेक्ट, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, भारत

सारांश
नारी विमर्श की प्रखर चिंतक और उपन्यासकार प्रभा खेतान का चर्चित उपन्यास स्त्री के शोषण, उत्पीडन और संघर्ष का जीवन दस्तावेज है। संपन्न मारवाडी समाज की पृष्ठभूमि में रची गई इस औपन्यासिक कृति की नायिका प्रिया परत–दर परद स्त्री जीवन के उन पक्षों को उघाड़ती चलती है जिनको पुरुष समाज औरत की स्वाभाविक नियति मानता रहा है और इस प्रक्रिया में वह हमें स्त्री की युगों–युगों से संचित पीड़ा से रु–ब–रु कराती है।

मूल शब्दः छिन्नमस्ता, नारी चेतना

प्रभा खेतान का छिन्नमस्ता उपन्यास कलकता रहनेवाले उच्यवर्गीय मारवाड़ी परिवार की कथा है। इस संपन्न परिवार में चोथी लड़की के रूप में प्रिया का अर्थात उपन्यास ना यिका का जन्म होता है। प्रिया जन्म से ही एक उपेक्षित लड़की रही है। उसे माँ का स्नेह कभी प्राप्त नहीं हुआ। उसका जन्म माँ एवं दादी को मात्र एक बढ़ता बोझ प्रतीत होता है। समस्त उपन्यास में प्रिया परिस्थितियों के कारण निरन्तर पुरुष से तथा पुरुष प्रधान समाज से संघर्ष करते हुए अपनी अस्मिता की रक्षा करती है।

प्रिया को जन्म से ही विद्रोहिणी बनाने क मूल में अनेक यातनाओं का इतिहास है। उसका शैशव अनवरत बलात्कारों की कड़ी है। संगे बड़े भाई द्वारा साढ़े नौ वर्षोय बहन का बार–बार बलात्कार प्रिया के अन्दर घृणा के उफान को लाता है। बलात्कार के इस भयावह सिलसिले से मुक्ति पाने के लिए प्रिया आत्महत्या का दृढ़ निश्चल करती है और उससे भाई परिचित कराते हुए इस शाप से मुक्ति प्राप्त करती है । पुरुष की वासना के शिकार का यहाँ अन्त नहीं होता है, आगे महाविद्यालय में प्रिया को प्रो. मुकर्जो से प्रेम के नाम पर इसी वासना का उपहार मिलता है। यह घटना प्रिया में इतना परिवर्तन लाकर रख देती है कि प्रेम, विवाह, सेक्स इन शब्दों से उसका विश्वास उठ जाता है।

पुरुषों से घृणा करते हुए भी बाइस वर्ष की आयु में प्रिया का विवाह एक करोड़पति अग्रवाल घराने में होता है। अपेक्षा से अच्छा ससुराल प्रिया को प्राप्त होता है। लेकिन शादी के दूसरे ही दिन उसके पति एक वहशी जानवर से अधिक कुछ भी नहीं है। नरेन्द्र भी नजर में प्रिया मात्र एक साधन है। उसके साथ पार्टियों में जानेवाली मात्र एक गुड़िया है। प्रिया को नरेन्द्र के ऐसे व्यवहार से नफरत सी होने लगती है। अपने इस जीवन से ऊबकर प्रिया नरेंद्र की इच्छा से ही एक छोटा व्यापार आरम्भ करती है। जिसके परिणाम स्वरूप उसे अपने अन्दर छिपी शक्ति का महसास होता है। दिन रात की मेहनत से प्रिया अपने व्यापार को बढ़ाती है। उसकी तरक्की को नरेंद्र स्वीकार नहीं कर पाता। हर बात पर प्रिया को अपमानित करने में उसे बड़ा आनन्द आता है। उससे चिढ़ने, जलने लगता है। अध्ययन क्षेत्र छिन्नमस्ता उपन्यास में प्रभा खेतान परम्परा और आधुनिकता के बीच पिसी मारवाड़ी स्त्री के मन की मनोदशा को दिखाया है। प्रभाखेतान के उपन्यास में नारि विद्रोह उभरकर सामने आया है। यह उपन्यास समाज में स्त्री की हीन एवं दोयम अवस्था को दर्शाने में सक्षम है।

नारी चेतना ने स्त्री की स्थिति, उसकी मान्याताओं और संस्कारों को बहुत प्रभावित किया है। उसकी प्राचीन मान्यताएँ और मूल्य बदल चुके है।वह वैयक्तिक स्तर पर अहस्तक्षेप जिन्दगी जीना चाहती है। नारी स्वातन्त्र चेतना और आधुनिकता बोध ने उसकी सोच को नयी दिशा दी है। छिन्नमस्ता में स्त्री को कई रूपों में संघर्ष और प्रतिरोध करते दिखाया गया है। वह सर्वत्र अन्याय, अत्याचार और गलत निर्णय का प्रतिरोध करती है।

लेखिका कहती है कि भारतीय परम्परा ने निरन्तर स्त्री को प्रेम, समर्पण आदि महान बातों में फँसाकर घर में बिठाया है। नरेन्द्र भी प्रिया के समक्ष प्रेम, ईमानदारी, समर्पण की बात रखकर उसे फिर में चार दिवारी में कैंद करना चाहता है। व्यापार के परिणामस्वरूप प्रिया का आत्मविशवास इतना बढ़ जाता है कि वह नरेन्द्र से अलझने की उपेक्षा उसे उसके स्थान पर छोड़कर अपनी नयी अवस्था अपनी नयी जमीन प्राप्त करना स्वीकार करती है। अपने को शोषण से मुक्त करने केलिए अपने सारे संबंधों को तिलांजली दे देती है। उसने इस कदर अपनी आइडेंडिटी पाई है कि इण्डिया टुडे में उसका फोटे छपता है– एं ग्राट बिजेएस एटंरप्रायजर मिसेस प्रिया। इस प्रकार नारी समाज को एक आइडेंडिटी दी है प्रिया ने। नारी समाज को एक स्वायत्ता की इयत्ता का एहसास कराती है प्रिया। परम्परा से छुटकारा दिलाती है प्रिया।

अध्ययन क्षेत्र

छिन्नमस्ता उपन्यास में प्रभा खेतान परम्परा और आधुनिकता के बीच पिसी मारवाड़ी स्त्री के मन की मनोदशा को दिखाया है। प्रभाखेतान के उपन्यास में नारि विद्रोह उभरकर सामने आया है। यह उपन्यास समाज में स्त्री की हीन एवं दोयम अवस्था को दर्शाने में सक्षम है।

नारी चेतना ने स्त्री की स्थिति, उसकी मान्याताओं और संस्कारों को बहुत प्रभावित किया है। उसकी प्राचीन मान्यताएँ और मूल्य बदल चुके है।वह वैयक्तिक स्तर पर अहस्तक्षेप जिन्दगी जीना चाहती है। नारी स्वातन्त्र चेतना और आधुनिकता बोध ने उसकी सोच को नयी दिशा दी है। छिन्नमस्ता में स्त्री को कई रूपों में संघर्ष और प्रतिरोध करते दिखाया गया है। वह सर्वत्र अन्याय, अत्याचार और गलत निर्णय का प्रतिरोध करती है।

नारी का अन्तर्दृन्द्व

नारी को शोषित व दमित करने वाली हमारी पुरुष वर्चस्व की व्यवस्था हमारे संस्कारों का हिस्सा बन चुकी है, इस पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध आवाज उठाना अपने समाज और अपनी नैतिक सामाजिक धार्मिक प्रणाली को दिखण्डित करने से है अतः भारतीय नारी इस अन्तद्वन्द्व के बीच झूलती रहती है कि वह अपने सामाजिक व्यवस्था को विखण्डित करके स्वयं के अस्तित्व

को अपनाये, अथवा समाज को बनाये रखने में अपने आप को स्वहःकर दे।

अभिजात्य वर्ग की संपन्न संयुक्त परिवार की बेटी बहु प्रायः प्रत्येक स्त्री भौतिक सुरह सुविधा के बाद अनाथ और असहाय व्यवस्था के आकर्षण में सुरक्षा खोजते हुए पूर्ण जीवन व्यतीत कर देती है छिन्नमस्ता की प्रिया के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करके थी प्रिया अन्तर्मन की कशमकश से बाहर नहीं निकल पाती है।

प्रिया के जीवन का सबसे बड़ा द्वन्द्व तो तब होता है जब उसे अपने पति नरेन्द्र और बच्चे का छोड़ना होता है परिवार व व्यापार में एक ही को चुनना उसकी मजबूरी थी, क्योंकि नोन्द्र को उसका व्यापार करना पसन्द था वह उसके व्यापार से ईष्या करता है। प्रिया व्यापार का कायी नहीं छोड़ना चाहती है व्यापार ही उसकी पहचान और नरेन्द्र से उसे प्रेम की प्राप्ति नहीं मिली है, वह प्रिया को अपनी वस्तु अपना गुलाम बनाकर रखना चाहता है। प्रिया इस द्वन्द् से स्वयं को उभार लेती है और कार्यक्षेत्र व पति में से अपनी पहचान अपने कार्यक्षेत्र को चुनती है।

नारी की प्रतिस्थापना

सामाजिक पितृक मार्यादाओं में स्त्री इतनीजकड़ी हुई थी कि उसके सपने, आदर्श, कल्पनाएँ छिन्नभिन्न हो गई वह घरक चूल्हें चौके में कैद होकर रह गई उसका काम संतान पैदा करना उनकी देखभाल करना और समूची पीड़ा व शोषण को झेलना था। सामाजिक असहिष्णता ने उसे मनुष्य ही नहीं रहने दिया।

आज तक स्त्री पर पुरुष का वर्यस्व था और उसके प्रभुत्व की अधीनता वाणीहीन थी आज वही सी अपनी अस्मिता का तलाशने लगी है यह नारीवादी चेतना का उभार पुल्लिंग विमर्श के लिए सबसं बड़ी मुश्किल है। स्त्री अब अपनी पारम्परिक जीवन शैली से निजात पाना चाहती है।

प्रभा खेतान प्रिया द्वारा स्त्री के लिए बनाये रुढ़िगत भेदभाव के अन्तर्गत मासिक धर्म के नियमों को चुनौती देती है क्योंकि मासिक धर्म रढ़िगत संस्कृति मे एक अपवित्र कृत्य समझा जाता है अतःप्रिया अपनी बहन सरोज के साथ मिलकर इस छुआ छूत के विद्ध अवाज उठती है।

प्रिया एक महात्वाकाक्षी स्त्री हैं, जो पुरुष की बिछाई सारी बाधाओं को पार करती हुई पुरुष समाज में अपनी जगह बनाती है वह परिवार के भीतर यौन शोषण की शिकार रही है। वह सास, पति व सामाजिक अंकुशो से परिवार के दयमघोटू माहौल से बहुत ग्रसित होती है पर वह घबराती नहीं है। सरल शब्दों में यह कह सकते है कि प्रिया को यह समझ में आ गया था कि समझौते जिनदगी नष्ट कर देते हैं इसलिए उसने इन्कार की हिम्मत जुटाई और सक्षम होने पर पति की ज्यादतियों को सहाने की अपेक्षा उसने घर को छोड़ने का कदम उठाया है। अपने आत्म को पहचानने के लिए उसे मालूम है कि बाहर निकलना जरूरी है जबकि इस तथ्य से भी भलिभांति अवगत है कि वह बाहर निकलना वापस लौटने के लिए नहीं है किन्तु अब वह बार–बार अपनी जड़े उखाड़ने को तैयार नहीं है । प्रिया का पति उसे धमकाकर कमजोर करके उसे शोषित करना चाहता है और अपने लिए निर्णय लेना चाहती है और उनके परिणामों को भुगतने के लिए भी तैयार है। इसी कारण उसने उच्च व्यवसायी परिवार की कुलबधु कहलाने के स्थान पर 'छिन्नमस्ता' बन अपना व्यवसाय करना चाहा।

प्रभा खेतान ने स्त्री के अनेक रूपों का चित्रण किया है जिसमें विवशता, पीड़ा, और मानसी कष्ट की स्थिति में कभी समझौता करती है। प्रभा खेतान स्त्री की पीड़ा को समाप्त करने का समाधान भी देती है। उनके उपन्यास की नायिका पत्नी और माँ होने के साथ–साथ बाहरी जगत में एक नागरिक भी होना चाहती है

निष्कर्ष

स्त्री विमर्श, स्त्री को उसके व्यक्तिव और अस्मिता से परिचित कराता है। अभी तक स्त्री पितृक वर्चस्व को आत्मसात किये हुए, वाणीहीन स्वत्वहीन जीवन व्यतीत करती रही है। स्त्री विमर्श न केवल स्त्री के उत्पीड़न को सामने लाने का कार्य किया, बल्कि उसके मन में चेतना जागृत कर हजारों वर्षों से चले आ रहे पितृसत्तात्मक सिद्धान्तों को चुनौती दी है। स्त्री विमर्श पितृ सत्तात्मक सिद्धांतों में प्रचंड अंतविरोधों, व राजनीति को सामने लाया है स्त्री उत्पीड़न दुनिया भर में होता रहा है धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओं ने स्त्री की दुर्दशा में सहयोगी भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ सूची

1. छिन्नमस्ता प्रभा खेतान राजकमल प्रकाशन 2009
2. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार उषा कीर्ति राणावत वाणी प्रकाशन 2015
3. समकालीन हिन्दी साहित्य विविधविमर्श श्रीराम शर्मावाणीप्रकाशन 2009